

# ु असाधारण EXTRAORDINARY

भाग II—कण्ड ३—उप-कण्ड (ii) PART II—Section 3—Sub-Section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY 122/m/866

#• 310] No. 310]

नई दिल्ली, मंगलबार, जून 14, 1988/उपोध्ठ 24, 1910 NEW DELHI, TUESDAY, JUNE 14, 1988/JYAISTHA 24, 1910

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संस्था की जाती है जिससे कि यह अलग संस्थलन के कर में रखा जा सके

Separate Paging to given to this Fart in order that it may be filed as a separate compliation

नित्त संझालक

(राजस्य विभाग)

केन्द्रीव प्रत्यक्ष कर वीर्ड

**अधित्**चना

व्यय भार

नई दिल्ली, 14 जून, 1988

ना आ . 584(अ) :—केंग्द्रीय प्रत्यक्ष कर नोर्ड, व्यय कर अधिनियम, 1987 (1987 का 35) की धारा 31 द्वारा प्रक्त ज्ञानितयों का प्रयोग करते हुए, व्यय कर नियम, 1987 का संशोधन करने के लिए निम्मलिखित नियम अनाती है, अर्थात् :—

- 1. (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम व्ययकर (संशोधन) मियन, 1988 है।
- (2) ये राज्यक्ष में प्रकाशन की लारी वाकी प्रवृक्त होंगे।
- 2. ब्यथकरः नियम, 1987 में ---
  - (क) तियम 4 के पश्चात् निम्तलिखत नियम अन्त स्थापित किया जाएगा, धर्णात् :—
    "वारा 8 के अवीन प्रभाय व्यय की बाधन प्राप्त संदायों के योग की विवरणी।
- 5. अधिनियम की धारा 8 की उपकारा (1) वा उपवारा (2) के अधीम प्रस्तुत किए धाने के किए। अपेक्षित प्रधार्य की बाबत प्राप्त संज्ञां के योग की क्वियरणी प्ररूप सं. 3 में पेश की जाएगी और उसका श्रस्यापन उत्तर्में उपदक्षित रीति से किया जाएगा।

1563 GI/88

मागकी सूचनाः

ह. अधिनियम की घारा: 20 के अधीन मौग की सूचना प्ररूप सं. 4 में द्वीगी।

न्नायुक्त (अपील) को अपील का प्ररूप :

- 7. (1) अधिनियम की धारा 22 के अधीन आयुक्त (अपील) की कोई अपील प्रकृप सं, 5 में की जाएंगी और उसका सत्यापन उनमें उपदर्शिन रीति से किया जाएगा।
- (2) उपनिवास (1) में विद्या गया अपील का शृङ्ग अरोल के आधार पर और उत्तरे संतम्म सस्यापन निम्नणिखित द्वारा हुन्ताश्चरिक्ष किये वाएंगे:
  - (क) व्यक्षिट की देशा में, स्वयं व्यक्ति द्वारा वहां व्यक्ति भारत से बाहर है, बहां सम्बद्ध व्यक्ति द्वारा, या उसके द्वारा इस निमित्त सम्यक कप से प्राधिकृत कसी व्यक्ति द्वारा और वहा व्यक्ति अन्य ऐसे क्यक्ति द्वारा, को उसकी और में ऐसा करने की सक्षम हो;
  - (ख) हिन्दू अविभन्न कुटुम्ब की वणा में, कर्ना द्वारा और जहां कर्ना भारत से बाहर है या अपने कार्यों की वेखभाल करने में मानसिक रूप अक्षम है, वहां ऐसे कुटुम्ब के किसी अन्य न्यस्क सदस्य द्वारा:
  - (ग) किसी कंपनी की वशा में, उसके प्रबंध निर्वेशक द्वारा या जहां किसी अपरिद्यामें कारण से ऐसा प्रबन्ध निर्वेशक विवारणी पर हस्ताक्षर करने की उसे सत्थापित करने में सक्षम नहीं है या जहां प्रबंध निर्वेशक नहीं है, यहां उसके किसी निर्वेशक द्वारा या जहां किसी की दशा में निर्धारण किसी ऐसे उपकित पर किया गया है जिसे आंगकर अधिनियम की धारा 163 के अधीन उसका अभिकर्ता माना गया है, जैसा कि अधिनियम, 1,961 की धारा 24 के अधीन व्ययकर पर भी लागू होता है, बहां एसे व्यक्ति द्वारा ,
  - (च) किसी फर्न की दशा में, उसके प्रवन्ध भागीदार द्वारा या जहां किसी अपरिहार्य कारण से ऐसा प्रवन्ध भागीदारी विवरण पर हस्ताक्षर करने और उसे संस्थापित करने में सक्षम नहीं है, या जहां ऐसा प्रवन्ध भागीदार नहीं है, वहां उसके किसी ऐसे मागीदार द्वारा जो अक्सस्य नहीं है।
  - (क) स्थानीय प्राधिकरण की दशा में उसके प्रधान अधिकारी द्वारा,
  - (च) फिसी अन्य संगम की वशा में, संगम के फिसं/ सदस्य द्वाराया उसके प्रधान अधिकारी द्वारा, या
  - (छ) किसी अन्य व्यक्ति की बना में, उस व्यक्ति द्वारा या उसकी और से कार्य करने को सक्तम किसी व्यक्ति द्वारा ।

अरील अधिकारण को अवील और प्रस्थाओयों के जापन का प्रकृप :

- 8. (1) अपील अधिकरण को अधिनियम धारा 23 की उपकारा (1) या उपकारा (2) के अधीन अपील प्ररूप मं 6 में की जाएगी और उसका सत्यापन उसमें उपविचार रीति से किया जाएगा।
- (2) अपीस अधिकरण को अधिनियम की धारा 23 की उपधारा (4) के अधीन प्रत्याक्षेपों का ज्ञापन प्ररूप सं. 7 में किया जाएगा और उसका मुख्यापन उसमें उपर्यागत रीति से किया जाएगा।"
- परिविधिष्ट में, किन मं. 2 के परवान् निस्तलिखित त्रकार्ग मो अन्तःस्पर्गित किया जाएगा, अवित :---

''प्रहम सं. 3

क्ष्यम कर

		ाय कर अधिनियम, 1987 1रा 8 (1)/8(2)नियम 5	
	स्थायी लेखा सं.	पष्ट ग्रक्षरों में नाम	
पण्ट प्रवरों में कार्यालय ना पता दूरमाण सं. आई/सिकल ' जहां निर्धारित किया गया/निर्धारिणीय हैं :			
		निर्धारण वर्षे  यदि यह पुत्ररीक्षित विवरण है तो क्रुपया प्रस्तुत की गर्ड पूर्ववर्ती विवरणी की रसीव सं. और नारीख लिखें	
		रकीर गं	
(म	ावन म्ह	गस्यिति	
<u>म</u>	हां/नहीं विन मास	रसीद सं.	

		भाग-1 प्रभा	र्मे व्यय का विवरण		
1. निम्नलि	चित के उपवन्त्र के संबंध में उपग	त नृत प्रभागे व्यम :			
(क) कोई	वासं-स्रान, आःवासिक या अन्य	था	• • •		
(स) होटल	द्वारा खास या पेय, नाहे हॉटन	मिं या वाहर			
(ग) होटस	में किसी अन्य यक्ति द्वारा खा	ष्यायापेय			
	्या पट्टेपर होटल में कॉर्डवास-				
	। डारा हीटल में कोई अन्य सेवाएं त्य वैसी ही सेवाएं		, तरणताल के रूप में ।		
	झन्य व्यक्ति द्वारा होटल में कार्द अ या मन्य वैसी ही सेवाएं				
(ভ) (ক)	$(\pi) + (\pi) + (\pi) + (\pi) + (\pi)$	)+(च) का योग <b></b>			_
-	(दम रूपए के निकटतम गुरज तक इस, 1981 की धारा 288क)	थ्या पूर्णीकत	ष्यय-कर अधिनियम, 19	87 की धारा 24 द्वारा क	त्य कर को यथा लाग
भाग-2		ध्यय कर का विवरण			
त्रमार्गे व्यय,	संबर्हात व्यय कर सरकार को सं	दत्त कर का विवरण और उसके	संदाय को (मासवार)	तारीचा।	
कम्सं.	प्रभार्य व्यय	संग्रहण थोग्य <i>ःथश्च-</i> कर	सं <b>ग्र</b> हीत व्यय कर	सरकार को <b>संदत्त व्यय</b> कर	संवाय की तारीच (भालान संलग्न करें)
(1) •.	(2) T.	(3) ₹.	(4) •.	(⁵) ₹.	(6) •
1.					
2.					
<b>4</b> ·					
3.					
4.					
4.					
7.					
8.					
•					
9.					
10.					
11.					
1 2.					
योग				<u></u>	<u>,</u>

THE GAZETTE O	F INDIA: EXTRAORDINARY	[PART II—SEC. 3(ii)]
अर्गात्क संप्रतीत किए जाने बाले व्यवकर का असिये	to the same of	
with the authority to be and and and an anger		
		शब्दीं में ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' '
सरकार को संदाय किए जाने वाले व्ययक्तर का असिबी		
	स्तम्म (4)—अस्तम्भ (5) :	अंकों में
		शब्दों में ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' '
	•	
भाग 3प्रभार्य स्यय में शक्सिलित न की गई ।		ा याचा किया गया है।
্ষা	रा 5(i) से (iv) देखाए]	
बिशिष्टिमो	रक्षज	कारण बताएं कि क्यों करावेग भहीं है
		·
सत्यापन (टिप्पण 2 भीर 3 वेसिए)		
		·
•		······································
•	(स्पष्ट धक्षरों में पूरा मान)	
· , , ·	<b>युज्ञ/की पुजी/पत्नी भौर</b> ''	
(होटलटिस्टोकेंट/धांगार कला केन्द्र, स्वास्थ्य क्लब्र, तरण	ाल भाविका साम) का ः ः ः ः ः ः ः	<u>ģ</u>
( Bioxi) Crot Col 4 Inc. Inc. Inc. Inc. Inc. Inc. Inc. Inc.	,	- २ (पवनाम)
<b>क्षत्यनिष्ठा से घोषणा करता हं/करती है कि इस विवर्ण</b>	। भीर संख्यन विवरणों में वी गई जानकारी से	रे नवॉक्तन ज्ञान और विश्वास के धनुसार सही भौर पूण
है और उसमें दर्शित प्रभाव ज्यम ही एकम और प्रण्य वि		19 होते वाले
निर्धारण वर्ष से मुसंगत किसीय वर्ष के सबंध में हैं।		
मैं सत्यनिष्ठा से यह भी घोषणा करता हूं/करती न्लभ/ तरण ताल में या किसी घन्य सेवा के संबंध में,		प्रभाव व्यव *होटच/रेस्टोरेंट/श्रृंगार कला क्रेंग्र/स्वास्टब रंकिया गया है।
मैं मह भी भोवणा करता हं/करती हूं कि मैंं ∙	····की <b>है</b> ज़िबत में *हं	ोडल/रेस्कोरेड/अंगार कला केन्द्र/स्वास्थ्य कलब/नरण साल
	(भवनाणं)	
आदि की झोर से वह विवरणी चैंथार करने और देने सर	मापित करने के लिए चक्रव हुं।	
तारीच		
		हस्त <b>ा</b> भर
स्यान		
हिन्पण :		
<ol> <li>हैसियत उपर्वामत करने लिए कृपया निम्नलि।</li> </ol>	वितकोडसं. का प्रयोगकरें:	
व्यस्टि	01	
हिन्दू भविभिश्ता कुदुम्ब	02	
· (नीचे उल्लिखित से भिन्न)		
- हिन्दू अविभवत भुदुम्ब जिसके कम से कम एक सव	स्यकीपूर्ववर्तीवर्षमें कुल 03	
माय 18,000 दुपए अधिक है		
- प्रार्जिस्ट्रीश्वत कर्में	04	
··· रजिस्ट्रीकृत कर्म (युक्ति में लगी हुई से भिन्न)	0.5	
रजिस्ट्रीकृत फर्में, जो वृत्ति में लगी हुई है	06	

**\*को लागृ**म हो उसे काट दें।

- व्यक्तिक में का शिवाम (व्यक्त) - व्यक्तिक मिलान प्रकारित) - का प्रियंतिक का मिलान प्रकारित) - का प्रविद्ध में का मिलान प्रकारित) - का प्रविद्ध में का मिलान प्रविद्ध में 11 - का प्रविद्ध में का मिलान प्रविद्ध में 12 - को प्रविद्ध में कामी में मिलान में मिलान का में विश्व में हैं - को प्रविद्ध में कामी में में मिलान में मिलान में का मिलान में का मिलान में मिलान म	– ∞व्यक्तियों का संगम ( <b>म्य. का सं.</b> )	<b>U</b> 7			
- कृतिय विशिष्ट व्यक्ति   10 - नृहस्तरी मोमाइटी   11 - नृहस्तरी मोमाइटी   12 - कोई देशो क्षांनी हर्षण जनता पर्याण करने ने हिनक्द है   12 - कोई देशो क्षांनी हर्षण जनता पर्याण करने ने हिनक्द है   13 - कोई देशो क्षांनी हर्णण जारी महिंदि माने जनता पर्याण करने ने हिनक्द है   13 - कोई देशो कार्मानी कार क्षांनी या विशेषण कार्मान की है है   13 - केरी केर्मान के देशा के हिनके करना पर्याण कर में हिलक्द मही है   14 - टेमी क्षांनी में देशने मों है किर्म करना पर्याण कर में हिलक्द मही है   14 - टेमी क्षांनी में देशने की है किर्म करना पर्याण कर में हिलक्द मही है   15 - क्षानीय प्राधिक्तारी   10 2 - वह किरवाणी नित्नतिविद्ध द्वारा हुस्ताव्याण की जानी चाहिए   16 - क्षानीय प्राधिक्तारी   10 2 - वह किरवाणी नित्नतिविद्ध द्वारा हुस्ताव्याण की जानी चाहिए   16 - क्षानीय प्राधिक्तारी   15 - क्षानीय प्राधिक कर से प्राधिक हो   वो प्राधिक की की की हिए समान हो   वा प्राधिक को में तर में कार हो वार में की है को की वा प्राधिक की है की वा प्राधिक की है की वा प्राधिक की है कार है   वा प्राधिक की की हिए समान ही   वा प्राधिक की की नित्र मान ही   वा प्राधिक की है का माने कारी है का माने की हिए समान ही   वा प्राधिक की है का माने की हिए समान ही   वा प्राधिक की की समान की हिए समान ही   वा प्राधिक की है का माने की हिए समान ही   वा प्राधिक की है का माने की हिए समान ही   वा प्राधिक की हिए समान ही है वा प्राधिक की हिए समान ही है वा प्राधिक की हिए समान ही हिए सा माने की हिए समान ही हिए से प्राधिक की हिए समान ही हिए से प्राधिक की हिए समान ही हिए से प्राधिक की हिए समान है है वह प्राधिक की है का ने साने है है वह प्राधिक की है का ने साने है है वह प्राधिक की हिए समान ही है वह समान है है वह समान की हिए समान है है वह समान के हिण्ला समान है है वह समान के हिण्ला समान है है वह समान के है हिण्ला की हिणा है की है वह समान के है हिण्ला माने है है वह समान है है है है वह समान है है वह समान	व्यक्तिमी का संगम (स्यास)	0.	•		
- महत्वारी मोनावारी  - कार्य देशी कार्याणी जो ऐसी कमारी नहीं है किससे उन्हार जाया जायांच कर से निजयब है  - कोर्य देशी कार्याणी जो ऐसी कमारी नहीं है किससे उन्हार जायांचा कर से निजयब है  चौर को क्षायांचिक कम्यणी या विशिवाता का कारी नहीं है  - कोर्य देशी कमारी लोर क्षायांचिक कमारी या कोर्य विशिवाया कमारी है कीर  - व्यानी कमारी लोर क्षायांचिक कमारी या कोर्य विशिवाया कमारी है कीर  - क्षानी कमारी से पित्र के साम कमारी पाणित कोर कमारी पाणित कमारी है   14  - क्षानी कमारी से पित्र कोर्य के साम कमारी पाणित कमारी है   15  - क्ष्मानी कमारी किसारी  2 वह विवरणी निमानिविध्य द्वारा इस्ताविंग्य की नारी चाहित है   16  - क्ष्मानी कमारी निमानिविध्य द्वारा इस्ताविंग्य की नारी चाहित है   वह कमार करने के साम कमारी की नारी की नारी की नारी कमारी की नारी की नारी का नारी की नारी का नारी की नारी का नारी की		09		·	
- कोई देशी क्षेत्रवी जिल्में जनवापमां का के हिल्किया है  - कोई देशी क्षेत्रवी जिल्में जनवापमां कर के हिल्किया है  - कोई देशी क्षेत्रवी जोएक व्यावाधिक कारणी में हिल्किया कर को वित्तवय है  - कोई देशी करनी जोएक व्यावाधिक कारणी या कोई विनिधार। करने हिल्किय नहीं है  - के कोई देशी करनी जोएक व्यावाधिक कारणी या कोई विनिधार। करने हिल्किय नहीं है  - वह किरणी निस्तीविकत द्वारण इस्ताधिक की अती काहिए :  (क) किसी व्यक्ति की बता में, तर्व वर्षार द्वारण, जहीं वर्षाह कर कि बताद है, वहा सरवाद कित द्वारण मा लेके कोई कोई है  - वहां किरणी निस्तीविकत द्वारण इस्ताधिक की अती काहिए :  (क) किसी वर्षात की बता में, तर्व वर्षार द्वारण, जहीं वर्षाह कर कित काल है  - वहां की साम व्यक्ति द्वारण में करनी काल की कोई में काल करने के स्वाव है  - काल काल करने के बताय के वर्षाह देश है  - काल की काल व्यक्ति द्वारण के किसी काल करने किया स्वाव है  - काल के किया मा काल की काल करने के साम काल है  - काल करने के साम काल की काल करने के साम काल करने काल करने काल करने के साम काल है  - काल करने के साम काल करने के साम काल करने है  - काल करने के साम काल करने के साम काल करने है  - काल करने के साम काल करने के साम काल करने काल करने काल करने काल करने के साम के साम के साम काल करने के साम काल की प्रचान के साम काल काल करने के साम काल करने के साम काल की प्रचान के साम के साम काल काल करने के साम का		10	•	•	
कोई देवी बम्मती जो ऐसी बम्मती नहीं है जिससे जनमा पर्योग का से हिल्लख है  क्षीर जो अध्यारिक कम्मती जो किरियामा का कमती नहीं है  - क्षेत्र किस्ती ओहक अध्यारिक कम्मती नहीं है किसाना बम्मती हो है  - क्ष्मती ब्रंगिस किस्ती औहक अध्येशक कम्मती नहीं है किसाना बम्मती हो है  - क्ष्मती ब्रंगिस किस्ती के हिल्लख के कमती चाहिए :  (क) किसी व्यक्ति के तमा में, क्ष्मत के व्यक्ति हो। और अप्त कहा के ब्रंगिस मारत से बाहर है, बहु जन्मद ब्रंगिस हो। या ऐसे व्यक्ति हो। यो उसके मारत के ब्रंगिस का है क्ष्मत करने में स्वास कर के विवास कर कर कर कर कर कर के ब्रंगिस हो। या किसी प्रस्त का कर के ब्रंगिस हो। यो उसके मारत के ब्रंगिस के हिल्लख हो। यो उसके मारत के ब्रंगिस का हो। यो किसी प्रस्त का करने हें वार्गिस कर करिया हो। यो उसके मारत कर कर कर के ब्रंगिस हो। यो उसके मारत के ब्रंगिस हो। यो उसके कर कर के ब्रंगिस हो। यो उसके मारत के ब्रंगिस हो। यो उसके कर में स्वास करने हैं वार्गिस कर कर के ब्रंगिस हो। यो उसके मारत के ब्रंगिस हो। यो उसके मारत के ब्रंगिस हो। यो उसके हमा में हैं यो उसके हमा में अपन कर कर के ब्रंगिस कर कर में साम मही है यो उसके कर क्षित कर हमा यो विवास कर के ब्रंगिस कर कर के ब्रंगिस हो। यो उसके हमा में हैं यो उसके हमा में विवास कर कर के ब्रंगिस कर हमा के हमा में साम में हैं यो उसके हमा में विवास कर कर के ब्रंगिस कर हमा के हमा में साम में हैं यो उसके हमा में विवास कर कर के ब्रंगिस कर हमा यो विवास कर के हमा में साम में हैं यो उसके मारत हमा के हमा में व्यक्ति हमा में साम में साम में साम में साम में साम में हमा के हिंगी मारत हमा में साम में साम में साम में साम में साम में साम में हमा में हमा में उसके मारत में हमा में साम में हमा में उसके मारत हमा में साम में साम में हमा में साम में साम में साम में साम में साम में साम में हमा में साम में	-	11			
सीर जो स्थापिक क्रमणी या किरियामा का क्यांगी नहीं है   14   - क्यां हे जो क्यां में स्थापिक व्यापा का के विशिष्ण मां के हिंदी करने जे लगा प्रयोग का के विश्व का ती है जो   15   - क्यांगीय प्राप्तिक क्यांगीय का के विश्व का ती है   16   - क्यांगीय प्राप्तिक क्यांगीय का ते विश्व का ती है   16   - क्यांगीय प्राप्तिक क्यांगीय का त्यांगीय का ती है क्यांगीय प्राप्तिक का ते हैं क्यांगीय का ती है   16   - क्यांगीय प्राप्तिक का त्यांगीय का ती है क्यांगीय का ती है   16   - क्यांगीय प्राप्तिक का ती है क्यांगीय होगीय का ती है क्यांगीय होगीय के क्यांगीय का ती है क्यांगीय का ती है क्यांगीय होगीय के ती है क्यांगीय				•	
बहु एक ऐसी क्षेत्री भी हि जिसने जनना प्रमाण कर से हिल्मख नहीं है 15 स्थानीय प्रक्रिक्त हैं करनी   15 स्थानीय प्रक्रिक्त हों स्थान कर से जानी चाहिए :—  (क) किसी व्यक्ति कर से विकास है कर प्रक्रिक हों हों जानी चाहिए :—  (क) किसी व्यक्ति कर व्यक्ति हों हों भी र जहां नह वर्गण्य माने के स्थान हैं है नह स्थान करने हैं मानितन हों से वाल कर हों हो					
स्वानीय प्राधिकारी  2 वह विवरणी निन्नितिवित द्वारा हस्ताक्षरित की आनी चाहिए :  (क) किसी वर्णिट की रहार में, स्वयं वर्णिट द्वारा, जहां न्दिन भारत में बाहर है, बहु सरवह करनेत द्वारा ना नेत करने द्वारा करने के दारा सरक कर से वाधिकत हो। और जहां कर कार्य करने के तिन सरक हो।  (क) किसी वर्णिट की रहार में वाधिकत हो। और जहां कर साम करने के तिन सरक हो।  (क) किसूर प्रिमेश्वर मुख्य की दला में कर्जा द्वारा करा निर्मा करने में स्वर हुए से के हिए हो हुए के किसी परण करने से निर्मा करने के तिन सरक हुए से किसी परण करने से नाम के वाधिक है।  (क) किसी क्रंपी की वाग में, उनके प्रकार कराय हुए ते किसी मारिहार्य कारण से ऐसा प्रकार किसी की विवरणों पर हस्ताकर करने की जो से स्वर्णित करने में सक्स प्रकार है।  (व) किसी क्रंपी की वाग में, उनके प्रकार में ही है पर जहां किसी मारिहार्य कारण से ऐसा प्रकार किसी की विवरणों पर हस्ताकर करने की जे सक्सित का निर्मा कारण में सक्स में माना गया है किसी मारिहार्य कारण में सित्र के स्वर में माना गया है हिंदी स्वर्ण होने स्वर्ण करने में सहस के माना गया है हिंदी है।  (व) किसी कर्ण की तक्स में करने मार्थी है या जहां कीई एसा प्रवाद करी है। से पारी प्रवाद विवरणों में स्वर्ण करने में सक्स माणीदार हारा या जहां कीई एसा प्रवाद करेंदि है।  (व) क्रियाणित मारिकारों को देशा में, उन्हें प्रवाद कारण करने प्रवाद परिकारों हो।  (व) किसी सम्य क्षतित की दवा में, उन्हें प्रवाद प्रवाद की मिरिहारों हो।  (व) किसी सम्य कारण की साम में, उन्हें प्रवाद प्रवाद करने प्रवाद करने के तिए सजन करने हा।  3. सत्याण पर हताकर करने से पुढे, हताक्षतिका कारण जनने प्रवाद परिकारों हो।  3. सत्याण पर हताकर करने से पुढे, हताकरका की मार्या जनने प्रवाद करने की स्वर्ण मान से कार के निर्म ना कि ही होगी।  4. स्वर कर प्रितियम, 1987 की धारा 7 की जनवादा (1) से उपकारों के मनुशार किसी मान से का की नही होगी, निज्ह जो बात के हो।  (विवर पर्ण मान की 10 लारीव्य सरकार के कान में संदाद किया आरे स्वर्ण मान के दीवर सान के दीवर सन्दीत कर, प्रवाद सरकार के कान मार्य हो स्वर्ण मान की दीवर सन्दीत कर, प्रवाद सरकार के कान मार्य हो साम के दीवर सान के दीवर मार्य के स्वर्ण मार्य हो स्वर्ण मार्य हो साम के दीवर माल के दीवर मार्य सन्दित करना सन्दी है।  (विवर पर्ण मार्य की साम मा				,	
<ul> <li>2. बहु स्वयंती नित्नतिक्षित द्वारा स्थायकारित की जानी काहिए :</li> <li>(क) किसी व्यांट की वंता में, अर्थ वंशिष्ट द्वारा, जहां गरिन मारत से बाहर है, वहा करबा घरतित द्वारा से लेक वंदार की हता में, अर्थ वंशिष्ठ द्वारा, जहां गरिन मारत से बाहर है, वहा करबा घरतित द्वारा से लेक वंदार दें तहीं उपकार करने में सानिक का में यहा है वहां उपके हिए सदान द्वारा सा किसी प्रत्य काल दारा को उसता में कार्य घरते कहां करने चित्र कार्य करने में सान करने में मारतिक का में अराव है वहां एके कुटक के किसी पर उपकार सदस्य द्वारा ।</li> <li>(म) किसी कंपनी की बता में, उसके प्रत्य विकास दारा या जहां किसी मारिकार के स्वांत उत्तर दें सा प्रतिक काल मही है या प्रति के कुटक निवास का निवास का मही है या प्रति के कुटक निवास का निवास</li></ul>	देशी कंपनी से भिन्न कोई कंपनी	15			
(क्) फिली कार्यट की बात में, न्ययं वरिष्ट बारा, जहां न्यित मारत से बाहर है, वहा सत्यद्ध करते हा या तुन कार्यन बारा जो हुन सितन जनके बारा साम्यक कर से प्राविक्त हो। भी राजहं जह वर्गट करने कारी को देवनात करने में सानित हो से नात है वहां उनके संस्था बारा या किसी धान व्यक्ति बारा जो उसकों भीर से कार्य करने के लिए मधान हो।  (ख) हिन्दू अविभावत कुरूब के किसी भाव कारक सदस्य बारा था।  (ग) किसी कंपनी की दला में, उसके प्रकथ निरंतन कारा, या जहां किसी भारितां कारण से ऐसा प्रकल निवंदाक विद्याल करने भी अब सत्यारित करने में सक्ता नहीं है या जहां कोई प्रवश्च निवंदा अपने किसी की दला में उसके प्रवण्य निवंदा कारा या प्रतिवासों की दला में अहां किसी क्षा नहीं है वही उनके किसी भी निवंदा बारा या प्रतिवासों की दला में अहां किसी क्षा में जात निवंदा किया गया है, जिने भावकर प्रतिविचन, 1961 की धारा 163 के मधीन उनके मिसतातों के क्षा में माना है, जिने भावकर प्रतिविचन, 1961 की धारा 163 के मधीन उनके मिसतातों के क्षा में माना है, जिने भावकर प्रतिविचन, 1961 की धारा 163 के मधीन उनके मिसतातों के क्षा में माना है, जिने भावकर प्रतिविचन, 1961 की धारा 163 के मधीन उनके मिसतातों के क्षा में माना है, उसके प्रवास कार्य या जहां किसी मान बच्च माना है, उसके प्रवास कार्यकर प्रतिविचन करने में साना में, उसके प्रवास कार्यकरों है। या जहां कार्यकर में साना में, उसके प्रवास कार्यकरों है। या जहां कारण में देश माना में माना में, उसके प्रवास कार्यकरों है। वहां माना माना में सान में, उसके प्रवास कार्यकरों हो पार प्रवास करने के लिए सताता हिया माना माना माना माना माना माना माना मा	~- स् <del>यानी</del> य प्राधिकारी	16			
उसके द्वारा सम्यक् कर से प्रसिक्त हो : भीर जहां तह वर्षेट घरने कारी थारे हे बना करने से सार्तित का से सार हु वहां उसके संदर्ध द्वारा या किसी प्रत्य जानित दारा थो उसकी घरे ते कार्य घरने के किए मध्य हो ।  (ख) हिन्दू प्रविभवन कुट्टच की किसी घरव बहुक सदस्य द्वारा ।  (ग) किसी करने की रहा में, उसके प्रकास सदस्य द्वारा ।  (ग) किसी करने की रहा में, उसके प्रकास सदस्य द्वारा ।  (ग) किसी करने में सक्तन नहीं है या जहीं कोई प्रवश्च निवेशक नहीं है नहीं उसके किसी भी निवेशक द्वारा या सिन्ताओं की दशा में जहां से अहां कि व्यक्ति का निर्माण किया गया है, जिसे मानकर प्रविनिधन, 1961 की प्रारा 163 के मधीन उसके मिन्ताओं के क्या में माना गया है, विसे मानकर प्रविनिधन, 1961 की प्रारा 163 के मधीन उसके मिन्ताओं पर हत्याक्षर करने और वहां में कार की बना में, उसके प्रवश्च मानीवार हारा या नहीं किसी मार्गेहार को है ।  (ख) किसी करने की दशा में, उसके प्रवश्च मानीवार हारा या नहीं किसी मार्गेहार कहें है ।  (ख) स्वानीय प्राविकारों को दशा में, उसके प्रवश्च प्रवश्च किसी मार्गेहार कहीं है , वहीं उसके किसी मार्गेहार द्वारा ।  (ख) किसी मान्य कीन की दशा में, उसके प्रवश्च प्रवश्च कार्यकारों मानीवार हारा:  (ख) किसी मान्य कीन की दशा में, उसके प्रवश्च प्रवश्च उसके मार्गेहार हारा:  (ख) किसी मान्य कीन की दशा में, उसके प्रवश्च प्रवश्च उसके मार्गेहार हारा:  (ख) किसी मान्य कीन की दशा में, उसके प्रवश्च प्रवश्च कार्यकरों के कार्यकरों के लिए सतम हिनी व्यव्च हिना सार के विवरण ही ही ।  (ख) किसी मान्य कीन की दशा में, उसके प्रवश्च प्रवश्च प्रवश्च करने करने कि लिए सतम हिनी व्यव्च हिना सार के विवरण ही ही सार्गेह की सार्गेह होती होता है ।  (ख) किसी मान्य कीन की दशा में, उसके प्रवश्च प्रवश्च प्रवश्च करने के लिए सतम हिनी व्यव्च करना सार के विवरण होती होता है ।  (ख) किसी मान्य कीन की होता होता होता मान के विवरण मान की हिना मान के दीरात संवरण होता होता विवरण होता होता होता होता होता होता होता होता	<ol> <li>यह विवरणी निम्निलिखत द्वारा हस्थाक्षरित की जानी चाहिए :-</li> </ol>	_			
है वहाँ ऐसे बुटुम्ब के किसी मन्य ब्युक्त सरस्य द्वारा।  (ग) किसी कंपनी की बला में, उसके प्रकल्य निरंतक द्वारा, या जहां किसी मारिहार्य कारण से ऐसा प्रकल्य किसेशक विद्याला पर हस्ताक्षर करने और उसे सर्वापित करने में सक्षम नहीं है या जहां की इपक्ष निर्देश नहीं है वहां उसके किसी भी निर्देशक द्वारा या मिलातों को दशा में अहां किसी व्यक्ति काने ने संस्थान हों है या जहां की इपक्ष मिलात प्रितिनंतन, 1961 की धारा 163 के स्वीन उसके मिलातों के क्या में मन्ता गया है जिने सावकर प्रितिनंतन, 1961 की धारा 163 के स्वीन उसके मंगिरता दिशा गया है जिने सावकर प्रितिनंतन, 1961 की धारा 163 के स्वापित करने में सक्षम नहीं है या जहां कीई ऐसा प्रकल्य सावीदार नहीं है, वहां उनके किसी से मानीदार द्वारा, जो सदस्य नहीं है।  (अ) क्यानीय प्राधिकारों को दशा में, उसके प्रधान प्रधिकारी द्वारा।  (अ) किसी स्वयं संगय की दशा में, उसके प्रधान प्रधिकारी द्वारा।  (अ) किसी स्वयं संगय की दशा में, उसके प्रधान प्रधिकारी द्वारा।  (अ) किसी स्वयं संगय की दशा में, उसके प्रधान प्रधान की कार्य मारिहारों द्वारा; स्वीर (अ) क्यानीय प्रधान की दशा में, संगम के किसी सम्य या उनके प्रधान प्रधान करने किसी स्वयं स्वयं स्वयं संगम की प्रधान करने तार के विवरणा सही हो।  (अ) किसी स्वयं संगय की दशा में उसके प्रधान प्रधान की स्वयं मारिहार द्वारा; स्वाप संगम किसी स्वयं संगम तार के विवरणा सही स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं करने हो। स्वयं संगयं स्वयं स्वयं संगयं स्वयं करने हो। साव संगयं हो।  4. स्वयं कर प्रधानियम, 1987 की धारा 7 की उपवारा (1) के उपव्यं के सनुनार किसी भी करनेंडर मान के दीरान संगयं संगयं संगयं मान की 10 तारीक तक केचीय नरकार के खाने में संदाय किया जारणा प्रीर ऐसे मानियम मान की सुनन हो। विवयं संगयं संगयं संगयं संगयं साव की 10 तारीक तक केचीय नरकार के खाने में संदाय किया जारणा प्रीर ऐसे मानियम मान की नुन किया नाम संगयं के साव संजल में संवाम मान की सुनन वार मान की 10 तारीक तक केचीय नरकार के खाने में संवाम मान की सुनन वार मान की सुनन वार मान की सुनन वार स्वयं मान की सुनन वार सुनन केचीय नरकार सुनन केचीय नरकार सुनन केचीय नरकार सुनन केचीय सुनन केचीय नरकार सुनन केचीय सुनन वार सुनन केचीय सुनन वार सुनन केचीय	उसके द्वारा सम्यक् रूप से प्राधिकृत हो ; ब्रौर जहां वह वर्राव्य द्वारा या किसी घ्रत्य व्यक्ति द्वारा को उसकी श्रीर से कार्य करने	भ्राने कार्रीकी देशभात करते से किलिए सक्षम हो ।	मलिकि हामे	अप्रता 👸 वहां उप	कि संरक्षक
जसे सल्यांपित करने में सलय नहीं है या जहीं कोई प्रस्थ निवेशक नहीं है वहां उसके किसी भी निवेशक द्वारा या सिन्दासी की प्रका में जहां किसी व्यक्ति का निविद्या किसी पान है, जिने सायकर प्रियित्यन, 1961 की प्राप्त 163 के स्वीन उतके स्विक्ति के इस में साना स्वा है वहां हों स्वित्त कारों में उतके प्रकल में साना साम है। वहां हों हों किसी को की बचा में, उसके प्रकल मानीदार द्वारा या जहां किसी सर्वर्श कारण में पेमा प्रवस्त भागीदार द्वारा हों है।  (क) स्वानीय प्राप्तिकारों की दशा में, उसके प्रधान करिकारी द्वारा ।  (क) किसी प्रस्य संगत की दशा में, उसके प्रधान करिकारी द्वारा ।  (क) किसी प्रस्य संगत की दशा में, उसके प्रधान करिकारी सर्वर्श कारण के लिए सतम हिसी कारण और इसके ताव के विवर्शण सही और समी प्रकार के की दशा में उस व्यक्ति द्वारा या उसकी भार से कार्य कर केना काहिए कि तह विवर्ण और इसके ताव के विवर्ण सही प्रोप्त सभी प्रकार से पूर्ण हैं। कोई भी व्यक्ति की इस विवर्ण या इसके साथ के विवर्णों में कोई निवर्श क्षत करेगा, व्यव कर स्वित्त मान की किस की प्रवित्त मान की किस की वहीं होगी, किन्दु जो सान वर्ष कर की स्वर्णों मोर जुनीने से वंद्याम प्रकार की विवर्णों के अनुसार किसी भी करनेंडर सान के दीयत संग्रीत का स्वर्ण की हो सकिया, भीर जुनीने से वंद्याम सरकार के खान में संवाद किया प्रत्या की मानिक संवाद का सबून इस विवर्णों के सान की किया जाना वाहिए ।  4. स्वय कर प्रधिनियम, 1987 की धारा 7 की उपवार (1) के उपवर्णों के अनुसार किसी भी करनेंडर सान के दीयत संग्रीत के सान संवाद का ना किया जाना वाहिए ।  4. स्वय कर प्रधिनियम, 1987 की धारा 7 की उपवर्णों के अनुसार किसी भी करनेंडर सान के दीयत संग्रीत के सान संवाद किया जाना वाहिए ।  5 विवर्ण वाला की सिंपों के सान की सिंपों के सान की सिंपों की स्वर्णों के सान की सुवर्णों के सान की सींपां की सींपां के सान की सींपां की सीं	(का) हिन्दू भ्रमिभना मुदुष्म की दला में कर्तादारा घीर जहां क है वहां ऐसे कुटुम्म के किसी भ्रन्य ब्यस्क सदस्य द्वारा ।	र्तीभारत से बाहर है वा प्रको व	हार्यों की देखभाज । 	करने में मानसिक स	न में अप्रम
उसे सत्वापित करने में सक्षम नहीं है या जहां कोई ऐसा प्रदर्भ भागीदार नहीं है, यह उनके किया भी मानीदार द्वारं, जो भावस्तर नहीं है।  (क) स्थानीय प्राधिकारों को दशा में, उसके प्रधान कथिकारों द्वारा ।  (क) किसी प्रत्य मंगन की दला में, संगम के किसी सश्य या उनके प्रवाल पश्चितारों द्वारा; और  (b) किसी प्रत्य क्यांन की दला में, संगम के किसी सश्य उसकी भीर से कार्य करने के लिए सक्षम किसी व्यक्ति द्वारा ।  3. सत्यापन पर हस्ताक्षर करने से पूर्व, हस्ताक्षरकर्ती की भागता यह समाधान कर लेना चाहिए कि यह विवरणों और इसकी साप के विवरण सही भीर सभी प्रकार से पूर्ण है। कोई भी व्यक्ति, जो इस विवरणों या इसकी साथ के विवरणों में कोई निर्ण क्षवन करेगा, व्यव कर मधिनियम, 1987 की धारा 27 के अधीन अपियोजन के लिए वायी होगा भीर शोषसिद्ध पर कड़ीर कारावास से, जिसकी भविम मान से कम की नहीं होगी, किन्दु जो सान पर्व की हो सकेगी, और जुनति से वंदर्शीय होगा ।  4. स्थव कर प्रथितियम, 1987 की धारा 7 की उपबारा (1) के उपबंधों के अनुसार किसी भी कलेंडर मान के दौरान संबहीत कर, उबन कलेंडर मास के टीन पर्यंत मान की 10 तारीक्ष तक केजीय सरकार के खाने में संवाद किया जारा। और ऐसे मानिस संवाद का सनून इस विवरणों के साथ सलान किया जाना वाहिए ।  प्रक्रम है. के  स्थय-कर प्रथितियम, 1987 की धारा 20 के संक्षीन मांग की सुवना  हैसियन ————————————————————————————————————	उसे सत्यापित करने में सक्तम नहीं है या जहां कोई प्रवस्थ निर् किसी व्यक्ति का निर्धारण किया गया है, जिसे भावकर प्रक्रिनिय-	देशक नहीं है वहां उसके किसी थं	ो निवे <del>शक</del> द्वारा या	मिनिवासीकी दश	रने और कामें जहां गया है,
(क) किसी बन्य संगम की दला में, संगम के किसी सहस्य या उनके प्रवास मिश्रारों हारा; बौर (छ) किसी बन्य व्यक्ति की दला में उस व्यक्ति हारा या उसकी बार से कार्य करने के लिए सक्षम किसी व्यक्ति हारा ।  3. सत्यापन पर हत्नाक्षर करने से पूर्व, हस्ताक्षरकर्ती को घरना यह समाधान कर लेना चाहिए कि यह विश्वरणों और इमने साथ के विश्वरण सहीं बीर सभी प्रकार से पूर्ण हैं। कोई भी व्यक्ति, जो इस विवरणों से किसी प्रकार से पूर्ण हैं। कोई भी व्यक्ति, जो इस विवरणों से प्रकार सिमोजन के लिए नाथी होगा बीर रोविसिंद पर कंडार कारावास से, जिसकी घनिया नीन साम से कम की नहीं होगी, किन्दु जो सान मर्च को हो सकेगी, और जुमनि से वंडनीय होगा।  4. स्थय कर प्रविनियम, 1987 की धारा 7 की उपवारा (1) के उपवश्यों के अनुसार किसी भी कनेंडर मान के दौरान संक्रहीत कर, उक्त कनेंडर मास के टीक प्रगान मास की 10 तारीख तक केन्द्रीय सरकार के खाने में संवाय किसी जारिए विश्वरण मास से 10 तारीख तक केन्द्रीय सरकार के खाने में संवाय किसी जारिए विश्वरण मास स्वाय का सनून इस विवरणों के साथ संलान किया जाना वाहिए।	उसे सत्यापित करने में सक्षम नहीं है या जहां कोई ऐमा प्र≇ं है।	स्ब भागीदार नहीं है, वहां उनके	त्र भागीदार विदर् किना भो मालीद	ो पर हस्ताक्षर <i>क्ष</i> शर द्वारः, जो मद	रने <b>भी</b> र स्मिक नहीं
(छ) किसी प्रम्य व्यक्ति की दशा में उस व्यक्ति द्वारा या उसकी घोर से कार्य करने के लिए सज़म किसी व्यक्ति द्वारा ।  3. सत्यापन पर हस्ताक्षर करने से पूर्व, हस्ताक्षरकर्ती को घरना यह समाधान कर नेना चाहिए कि यह विवरणों घोर इसने साव के विवरणों से होर सभी प्रकार से पूर्ण हैं । कोई भी व्यक्ति जो इस विवरणों या इसके साथ के विवरणों में कोई सिध्या कवन करेगा, क्या कर प्रधिनियम, 1987 की धारा 27 के अशीन प्रसिद्धान के लिए वायी होगा घोर शैविविद्धा पर करीर कारावास से, जिसकी प्रविद्धा सीन सोन के कि नहीं होगी, किन्दु जो सान वर्ष का की हो सकेगी, और जुमिन से वंदर्शय होगा ।  4. व्यव कर प्रधिनियम, 1987 की धारा 7 की उपवारा (1) के उपवरणों के अनुसार किसी भी कर्लेंडर मान के दौरान संबद्धीत कर, उक्त कर्लेंडर मास के टीक प्रमुख मास की 10 तारीख तक केलीय सरकार ने खाने में संवाद किया जाएगा और ऐसे मानिन संवाय का सबूत इस विवरणों के साथ संलान किया जाना वाहिए ।					
3. सत्यापन पर हस्ताक्षर करने से पूर्व, हस्ताक्षरकर्ती की घरना यह समाधान कर लेना काहिए कि यह विवरणों घीर इसके साय के विवरणों स्मी प्रकार से पूर्ण हैं। कोई भी व्यक्तिता होगा घीर वीविविद्ध पर कड़ीर कारावास से, जिसकी घर्या क्षवन करेगा, व्यथ कर प्रधिनिवम, 1987 की धारा 27 के प्रकीन प्रनिवान के लिए वाणी होगा घीर वीविविद्ध पर कड़ीर कारावास से, जिसकी घर्या तीन मान से कम की नहीं होगी, किन्दु जो सान वर्ष स्व की हो सकेगी, और जुमिन से वंदनीय होगा।  4. व्यय कर प्राविवियम, 1987 की धारा 7 की उपयारा (1) के उपवर्णों के अनुसार किसी भी कलेंडर मान के दौरान संस्तीत कर, उक्त कलेंडर मास के टीक घगण मास की 10 तारीख तक केन्द्रीय सरकार के खाने में संवाद किया जाएगा और ऐसे मानिस संवाय का सबूत इस विवरणों के साथ संलान किया जाना वाहिए।  प्रका सं. 4  क्षयस्कर  (नियम 6 वेबिए)  वेयुन-कर प्रविनियम, 1987 की धारा 20 के प्रधीन मांग की सुनना  हैसियत ————————————————————————————————————	•		स्त्रीक्ट्रांक्ट्रकार ।	•	
मास के टीक घराने मास की 10 तारीख तक केन्द्राय सरकार के खाने में संदाव किया जाएन। श्रीर ऐसे मानिक मंदाय का सबूत इस विशरणों के साथ संजान किया जाना चाहिए।  श्रिक्त है  श्रियस्कर  (नियम 6 वेकिए)  नेयम-कर श्रिकिनियम, 1987 की घारा 20 के श्रिकीन मांग की सूजना  हैसियत ————————————————————————————————————	3. सत्यापन पर हस्ताक्षर करने से पूर्व, हस्ताक्षरकर्ती को घरना यह बीर सभी प्रकार से पूर्ण हैं। कोई भी व्यक्ति, जो इस विवरणी या इसके साथ 27 के कक्षीन क्रमियोजन के लिए वायी होगा घोर दोवसिद्धि पर कड़ोर का इत की हो सकेगी, और जुमनि से वंडनीय होगा।	समाधान कर लेता चाहिए कि य व के विवरणों में कोई मिण्या कवा रावास से, जिसकी घवित्र तीन म	ह विवरणो घोर तकरेगा, ब्यथ कर स से कम की नहीं	झधिनिथम, 1987 होगी, किन्दु जो	की धारा सान भर्ष
प्रद-कर क्या के क्या कर क्या कर के क्या कर	मास के टीक घगले मास की 10 तारीख तक केन्द्रीय सरकार के आते में संब				
(नियम 6 वेशिए)  नेयम-कर श्रीक्षेतियम, 1987 की धारा 20 के श्रोधीन मांग की सूचना  है सियत		म इर्द 4	1 - 12 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 -	• I I	******
न्यय-कर प्रक्षितियम, 1987 की धारा 20 के ध्रधीन माग की सूचना हैसियत		प <del>य-फ</del> ार			
हैतियत र्पा ए सं	(नियम	ा ६ वेलिए)			
र्षा ए सं ,	न्यय-कर क्रांभिनियम १०८७ की ह	। रा 20 के श्रेषीन मांग की सूच	ना ं		
सेवा में,	- 174 the Ministry 1007 ft. s		हैसियत		
	-7,4 APC MINISTER 1.00% IN 0		-		
			-		

प्रभाव व्यव पर कर ह.	·	•
बारा 7(2) के अबीन संदेश कर		
संदेश भृतिशेष		
2. रकम इस सूचना की नामील के 35 दिन रिजॅब बैंक/प्राधिकृत बैंक में संवाय की जानी चाहिए। छा झायुक्त का के लिए गुक कर लिया है। संवाय के प्रयोजन के लिए गुक भालान सं	11	
		0.4 2004 2000
उ. याथ भाग पूर्वाका विवादिष्ट भवात्र के मातर इस रक्षम क का यथा लागू आयकर अधिनियम, 1961 ली धारा 220(2) के अनु की दर पर साधारण क्याण का संदाय करने के लिए दायी होंगे।	ा संदाय नहीं करेंने सो श्राप व्यय-कर प्रक्षितिसम, 1987 की धारा पःर पूर्वोक्त श्रवधि की समाप्ति के पश्काल् घारन्भ्र होने वाली तारीश्व	
4 यदि आप पूर्वोक्त विनिर्दिष्ट अविधि के भीतर कर की रकम क्यय कर को यथा लागू आयकर श्रीवितियम, 1961 की धारा 221 है हो सकेगी, जितनी कर की रकम् बकाया है) अविरोपित की जा सकेगी		
5. यदि प्राप पूर्वोक्त विनिदिष्ट प्रविध के भीतर रकम का संव 24 द्वारा व्यय-कर की यथा लागू, भायकर प्रधिनियम, 1961 की धार तीसरी धनुसूची के भनुसार की आएगी।	ाय नहीं करेंगे तो उसकी बच्चलों से सिए कारवाई, व्यय-क <b>र मधिनियम</b> त 222 से घारा 227, घारा 229, घारा 231, घारा 232 और १ -	
6. यदि अध्यक्त निर्धारण/मुंमिनि/शास्ति के विख्ळ अपील करने से सत्यापिस इस सूचना की प्राप्ति के नीत दिन के मीतर आयकर आयुः के अधीन अपील प्रस्तुत कर सकते हैं।	कामाशय है हो भ्राप प्ररूप 5 में, उस प्ररूप मे यथा श्रक्षि इत (भ्रगील)	
स्थाम	िन	र्बारण मधिकारी
नारीख	<u>'</u>	~~~~~~~
•	पता	
टिप्पण -		
<ol> <li>यथि ग्राप चैक द्वारा रेकम का संदाय करना चाहने हैं तो किया जाना चाहिए।</li> </ol>	चैक मारतोय स्टेट मैंक/मारतीय रिजर्व मैंक/प्राक्षिक्कत् मेंक क्रमंक	क के पन्न में जारी
वृद्धि या किस्तों में संदाय करने की अनुज्ञा के लिए आवेदन पैरा 2 में की समाध्य के परकात् प्राप्त किसी आवेदन को व्यव-कर अधिनियम, 220(3) के विशिष्ट अनुबंधों को व्यान में रखते हुए स्वीकार नहीं वि	1987 की धारा 24 द्वारा स्पय-कर की लाग् श्रामकर श्रीविनियम,	
<ol> <li>अनुसित मन्दां का लोप किया जाएगा।</li> </ol>	and the second second	
	प्रकार सं. 5	
	<i>ध्वय-</i> कर	
	(भियंस १ देखिए)	
	धौरा 22 के श्रधीन भायकर मायुक्त (भ्रपील) को भ्रपील ।	
	भागुक्त (भ्रुपेसः) का पदामिश्रान	
n	*सं. तारी <b>व</b>	19
<ol> <li>भावियक का नाम और पता</li> </ol>		
2. स्थायी खाता सं.		
3. वह निर्धारण वर्ष, जिसके संबंध में धपील की गई है		
4. उस-कामेन की, क्रिके विरुख क्रपील की गई है पारित करने बान	ा निर्घारण भिक्षकारी ।	ہے ہے۔ ند بہد یہ نہے۔ جب ہے بجاند اد
5. व्यय-कर ग्राधिनियम, 1987 की बहु धारा और उपवारा जिसके का भादेश पारित किया है, जिसके विख्ता ग्रंपील की गई है और उस	and the second s	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
6. जहां किसी निर्धारण या शास्ति या जुर्माने के संबंध में प्रपील की व सूजना की तामील की तारीख	ाई है वहां मांग की सुसंगत	· · · · · ,
الله المستخدل المامية على المرابع إلى المرابع إلى المرابع إلى المرابع المرابع المرابع المرابع المرابع المرابع ا	<del></del>	

		भाग्स का राजपद्ध असाधारण	7
7. किसी मन्य वजा में, उस भा ृहै	देश के प्रज्ञापन की तामी	ल की तारीला जिसके विरुद्ध ग्रापील की गई	,
<ol> <li>श्रदील में दात्राक्वन श्रनुतौष</li> </ol>			
<ol> <li>वह पता जिस पर झालेदक</li> </ol>	को सूचना भेनी छ। सं	<del></del>	
T			हस्साक्षरित (घपीकार्यी)
† सब्बों का विकरण			<u>-</u>
<sup>कं</sup> अपील के अप्रवाद			
			ह्ण्नावित (प्रयोक्षार्थी)
		मरब(पन	
· <b>聋</b>	क्रवील <i>ा</i> र्जी, त्रीवण	ा करता है कि उत्पर को भी क <b>क्त कि</b> वा गवाहै, मेरे सर्वेतिम-जात	और विकास के ऋतुकार करण है।
भाज तारीख	19	को सत्यापित	•
			हलाक रिन (झनील) मी)
स्थान	The state of the s		
टिप्पण :			
<ol> <li>भ्रतील का प्रकृष, भ्र जाना चाहिए।</li> </ol>	पील <b>के भाषार और</b> उस	में संलग्न सत्यापन का प्ररूप किसी क्यांनिण द्वार। नियम १०(२) के उप	वंधों के भ्रतमार हस्सामारित किया
	न, तब्यों का विचरण औ सूचना की मूल प्रति, यदि	र भ्रशील के भाषार दो प्रतियों में होते चाहिए और उसके साथ र कोई को पनी कोनी फाडिए।	स भावेग की प्रति, जिसके <b>विरूप</b>
ऋपाल का गइ हुआ र मागका		and the first of the state of t	
अप्राप्त का गइ हुआ र मागका 3. अनुचित शब्दों का	लोप कर दें।		
<ol> <li>धनुचित शब्दों का</li> </ol>	सोप कर दे। (।युक्त (४४पील) के कार्या		
3. धनुचित शब्दों का 4. * से विशिष्टियां ध	(युक्त (प्रयोज) के कार्या		1
3. धनुचित शब्दों का 4. * से विशिष्टियां ध	(युक्त (प्रयोज) के कार्या	लिय में भरी जाएंगी।	· I
<ol> <li>धनुचित शब्दों का</li> <li>4. * में विशिष्टियां श्र</li> </ol>	(युक्त (प्रयोज) के कार्या	लिय में भरी आएंगी। , इस प्रयोजन के लिए पृथक लॅलग्नकों का उपयोग किया जा नकेग।	· I
<ol> <li>धनुचित शब्दों का</li> <li>4. * में विशिष्टियां श्र</li> </ol>	(युक्त (प्रयोज) के कार्या	लिय में भरी जाएंगी। , इस प्रयोजन के लिए पूसक लेलग्लकों का उपसोग किया जा लेकेग। प्ररूप सं. G ज्यय-कर	1
<ol> <li>धनुचित शब्दों का</li> <li>4. * में विशिष्टियां श्र</li> </ol>	(युक्त (प्रयोज) के कार्या	लिय में भरी आएंगी। इस प्रयोजन के लिए पूसक लेलग्लकों का उपयोग किया जा लेकेग। प्ररूप सं. ६ ज्यय-कर (नियम 8 देखिए)	1
3. धनुचित शब्दों का 4. * से विशिष्टियां ध	(।युक्त (ध्रयील) के कार्या वन स्थान झप्यप्ति है नो	लिय में भरी आएंगी। , इस प्रयोजन के लिए पूसक लेलग्नकों का उपयोग किया जा नकेग। प्ररूप सं. ६ व्यय-कर (नियम 8 देखिए) अपील प्रसिकरण को धर्माल का प्ररूप	·I
<ol> <li>धनुचित शब्दों का</li> <li>4. * में विशिष्टियां श्र</li> </ol>	(।युक्त (ध्रयील) के कार्या वन स्थान झप्यप्ति है नो	लिय में भरी आएंगी।  हम प्रयोजन के लिए पूर्यक लेलग्नकों का उपमोग किया जा नकेग।  प्ररूप सं. ६  व्यय-कर  (नियम 8 देखिए)  प्रपील प्रसिकरण को प्रशील का प्ररूप	
3. धनुचित शब्दों का 4. * में विनिष्टियां ध	(।युक्त (ध्रयील) के कार्या वन स्थान झप्यप्ति है नो	लिय में भरी आएंगी।  हम प्रयोगन के लिए पूसक लेलग्नकों का उपयोग किया जा नकेग।  प्ररूप सं. 6  व्यय-कर  (नियम 8 देखिए)  अपील प्रविकरण को प्रणील का प्ररूप  र प्रपील प्रविकरण	तारी <b>य</b> ,.,1 <b>9</b>
3. धनुचित शब्दों का 4. * से विशिष्टियां ध	(।युक्त (ध्रयील) के कार्या वन स्थान झप्यप्ति है नो	लिय में भरी आएंगी।  हम प्रयोगन के लिए पूसक लेलग्नकों का उपयोग किया जा नकेग।  प्ररूप सं. 6  व्यय-कर  (नियम 8 देखिए)  अपील प्रविकरण को प्रणील का प्ररूप  र प्रपील प्रविकरण	
3. धनुचित शक्यों का 4. * में विशिष्टिया श्र 5. † सर्वि यहां उपसीध	(।युक्त (ध्रयील) के काया वन स्थान झपयप्ति है नो  झावक	लिय में भरी आएंगी।  हम प्रयोजन के लिए पूर्यक संलग्नकों का उपयोग किया जा नकेग।  प्रस्प सं. 6  व्यय-कर  (नियम 8 देखिए)  ध्रिपील प्रशिकरण को ध्रिपील का प्रश्य	तारी <b>य</b> ,.,1 <b>9</b>

4. \*\*मूल भाषेश पारित करने वाला निर्धारण भविकारी।

कं प्रधिनियम की घारा 17/122 भ्रायकर अधिनियम, 1981 की धारा 131(2)

में आदेश पारित किया था।

म स्मय-कर प्रधिनियम, 1987 की बहु बारा और उपधारा, जिनके समीत निर्धारण प्रधिकारी

			[ ] . I. [ ]
के भ्रश्लीन, जैसे कि व्यय-कर भाषेश पारित करने वाला भाग	• ` '		•
7. 🍴 भधिनियम की घारा 21	के भ्रजीन भादेश पारित करने बाला भायुक्त।		
8 उस छादेश की संसूचित का	ने की तारीका, विमने विरुद्ध मधीण की गई है		
<ol> <li>वह फ्ला, खिस पर प्रयीला</li> </ol>	र्शिको सूचनाएँ भेजी जासर्पेगी।		
10. बतु पेता, जिस पर ब्रह्मश्री व			
11: वह तारीका, जिसको मद 3 विवरणी फाइल की गई की	। में निर्दिष्ट निर्धारण वर्ष के लिए प्रकार्य स्थम,	यदि कोई हो, की	
क्रियुरणी फाइल्य करने के हि गई थी।	तो को सद 3 में निर्दिष्ट निर्धारण वर्ष के लिए तए उसे सुलाले क्रुए किसी सूचना की, यदि कोई	प्रभार्य व्यथ की हो, तामील की	
10. " भवील में दादाकृत अनुत	ोष		· .
* झपील के आजार			हस्तासरित (मनोबार्थी)
हस्स(भरित (प्राधिकृत प्रतिनिधि, यदि कोईह्रो	)		
	सत्यापम	•	
年, 表 :	बनोतानी, बोबगा करता है कि ऊपर जो भी	कवन जिला गया है, मेरे नर्नोत्तम झ	गत और विश्वास के <b>अनुसा</b> र सहय
হ। সা <b>গ</b>	नारीब	की मरू	गिपत
स्थान	-		हस्ताभारित (श्रवीलार्थी)
टिप्पण :			

भवील का शायन तीन प्रक्रियों में होना चाहिए और उसके साम उस अधिश की, जिसके विरूच अभील की गई है, दो प्रनिया (उनमें से कम से कम एक त्रसेगित प्रति होनी चाहिए) और निर्धारण प्रधिकारी के सुधंगत प्रादेश की दो प्रतियां लगी होनी चाहिए।

- प्रधिमिषम की बारा 23म के प्रधीम किसी निर्धारिती द्वारा भवील की वला में मुनील के साथ 200 स्वर की कीस होनी चाहिए। यह मुनाब दिया जाता है कि कीस, निर्दारण प्रविकारी से बालांन श्रीमश्राप्त करने के परवाल भारतीय स्टेट बैंक की किसी खाला या मारतीय रिवर्व बैंक की किसी शाखा या प्राधिकत वैंक की किसी काखा में जमा की जानी चाहिए और चालान की तीसरी प्रति ऋगील के जापन के साथ छशील अधिकरण की भेजी जानी चाहिए। अपील अधिकरण चैक, ब्राफ्ट, हुंडी या ग्रस्य परकाम्य लिखित स्वीकार नहीं करेगा।
- अनेल का जापन अंग्रेणी में लिखित होना चाहिए या यदि अनेल किसी ऐसी न्यायवीठ में वाखिल की गई हैं जो किसी ऐसे राज्य में स्थित हैं, जिसे तत्समय भपील मधिकरण के भव्यक्ष द्वारा मायकर (भ्रयील ग्रधिकरण) नियम, 1963 के नियम उक के प्रयोजनों के लिए अधिसूजित किया गया है ती, भ्रपीकार्थी को, संक्षिप्त तथा सुस्पष्ट गीर्थों के बन्नीन किसी तर्क या वृत्तात के भ्रपीक्ष के भ्राधारों को हिन्दी में वर्णित करने का विकल्प होगा और ऐसे भाषारों को ऋम से संक्यांकित किया जाना चाहिए।

- 4. \* मरील की सं. और वर्ष प्रपील प्रविश्वरण के कावन्तिय में धरा जाएगा।
- कंक ऐंसी मदों को बाट दें, जो खायू न हों।
- 6 \* यदि उपश्वित स्थात प्राथमित हो, तो इस प्रयोजन के लिए प्यक संलग्नकों का उपयोग किया जा सकेगा।

पहल स 😙

#### स्कस-व,र

	[निवन 🙂 (७) देखिए]	
	अभील अभिकरण का क्रमाक्षेणी के आपस का करूप	
	श्रीसकार अभीता श्रीश्वातरण	
	ं प्रत्याक्षेत्रः वर्षः ————————————————————————————————————	
	** श्रवीस में नाराज्या नारी <b>व</b>	<del>-</del> <del>-</del> <del>-</del> <del>-</del> <del>-</del> <del>-</del> <del>-</del> <del>-</del> <del>-</del>
	भर्गलार्थी	अनि।म्
		प्रत्यश्री
1	** छम कथिनारण ज्ञाण श्रावंटिश क्राण्य मं. शिनसे बरमाधीं व का ज्ञाबन संबंधित है	
2.	बप्र राज्ब, जिन्मी निर्धारण किया गका श	
. 3.	यह द्यापा और सपक्षाणाः जिलके स्रवीन यह श्रादेश, जिलके विष्णक ऋषील की गर्द है, पारित किया गत्रा था	
4.	बहु सिर्धाण्या भर्ष, जिल्ली लोबीय में प्रत्नादीन ता ज्ञापन जल्कृत किया गया है।	
5	क्षवीत्रार्थी प्राप्त क्षप्रिकण्या में काइस की गई समील की स्वास की पार्टिन की नारीसा	
6.	बह पता, जिस पत्र प्रस्वर्थी (प्रन्यासेयकर्ता) को सूचनाए भेंजी जा सकेती।	
ÿ.	बह पता, जिस पर अशीलाओं को कूचनाएं भेजी जा नहेंगी।	
8.	* प्रस्ताक्षेती के स्नावन में दावाहोत चनुसोष	
	-	* प्रत्याक्षेपो के श्राधार
हरूराश		ह्रमाक्षरित
·	(प्राधिदम अतिर्धिक्षित विध संगर्ध हुं।)	
		(प्र⊧मर्भी )
	सन्द <b>ा</b> न	
	में प्रध्वर्थी, कोबशा करना ह कि प्रथर जो भी कबन किया सबा है. मेरे सर्वेत्तम ज्ञान और	•
	शाल नारीकः 19 की सस्य	
		तस्त्राक्षरित (अस्यर्थी)
स्थान टिप्पण		(27.4.21)
(C.44)		

- अहमाओगों का झापन कीन अलिगों में द्वीमा चाहिए।
- 2. प्रत्याक्षेत्रों सा ज्ञापन अग्रेंगी में सिवियन श्रेंना चाहिए का वर्षि आपन किसी ऐसी स्वाप्त किसी है, जो किसी ऐसे राज्य में स्थित है, जिसे प्रयोग प्रक्रिकरण की प्रध्नक श्रीया तथा के प्रयोग प्रक्रिकरण की प्रध्नक श्रीया तथा के प्रयोग की लिए प्रधिम्चित किया गया है तो प्रयोग की लिए प्रधिम्चित किया गया है तो प्रयोग की परिवाद तथा तथा किसी परिवाद की प्रयोग की स्थापन की सम्मण्ड गोगों के प्रयोग किस। किसी मुझे वा बुलात के प्रवासीकों की हिन्दी में विवाद करने का विकरण हो और ऐसे प्रथ्याक्षेपों की अप से मुख्याक्षित किया प्राप्ता।
  - ; × अरुपाक्षेत्रों के अध्यन की से और अर्थ अपनील अवधिकरण की कार्यालय से भारे आहारों।
- ्र \*\* म्राधिकरण के कार्याज्य क्षारा मका मासंदित सवा प्रत्यकी द्वारा प्रत्य की गई स्रवील की सूचना में माया हुआ। स्रवील की स. और वर्ष प्रत्यर्थी द्वारा यहां भरा जाना है।
  - उर मदि इमबंधित स्थान धार्याक्त तै तो. धन त्रयोजन के लिए पणक नंलयन में का उपनीय किया जा गरेगा। "।

[सं ८००६ एक सं. 130/2/९९ - टी भी ति | विजय माधुर, निवेशका (टी मी एक)

## MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

Cuntral Board of Direct Taxes

#### MOTEFICATION

New, Delhi the 14th June, 1988

#### Expenditure-Tax

- S.O. 584(E).—In exercise of the powers conferred by section 31 of the Expenditure-tax Act, 1987 (35 of 1987), the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following rules to amend the Expenditure-tax Rules, 1987, namely:—
  - 1. (1) These Rules may be called the Expenditure-tax (Amendment) Rules, 1988.
  - (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
  - 2. In the Expenditurc-tax Rules, 1987, --
  - (a) after rule 4, the following rules shall be inserted, namely: -
  - "RETURN OF AGGREGATE OF THE PAYMENTS RECEIVED IN RESPECT OF CHARGEABLE EXPENDITURE UNDER SECTION 8.
- 5. The return of the aggregate of the payments received in respect of chargeable expenditure required to be furnished under sub-section (1) or sub-section (2) of section 8 of the Act shall be furnished in Form No. 3 and shall be verified in the manner indicated therein.

Notice of Demand.

6. The notice of deman 1 unior section 20 of the Act shall be in Form No. 4.

Form of Appeal to the Commissioner (Appeal).

- 7.(1) An appeal under section 23 of the Act to the Commissioner (Appeals) shall be made in Form No. 5 and shall be verified in the manner indicated therein.
- (2) The form of appeal prescribed by sub-rule (1) the grounds of appeal and the verification appended thereto shall be signed -
  - (a) In the case of an individual, by the individual himself where the individual is absent from India, by the individual concerned or by some person duly authorized by him in this behalf and where the individual is mentally incapacitated from attending to his affairs by his guardian or by any other person competent to act on his behalf;
  - (b) in the case of a Hindu undivided family by the Karta and where the Karta is absent from India or is mentally incapacitated from attending to his affairs, by any other adult member of such family:
  - (c) in the case of a company, by the managing director thereof, or where for any unavoidable reason such managing director is not able to sign and verify the return, or where there is no managing director, by any director thereof or where in the case of a non-resident, the assessment has been made on any person who has been treated as his agent under section 163 of the Income-tax Act, as applied to expenditure-tax under section 24 of the Act, by such person;
  - (d) in the case of a firm by the tax registry retries thereof, or where for any unavoidable reason such managing partner is not able to sign and verify the return, or where there is no managing partner as such, by way any partner thereof, not being a minor;
  - (c) in the case of a local authority, by the principal officer thereof;
  - (f) in the case of any other association, by any member of the association or the principal officer thereof; or
- (g) in the case of any other person, by that person or by some person competent to act on his behalf. Form of appeal and Memoran him of Cross-objections to Appellate Tribunal.
- 8:(1) An appeal under sub-nation (1) or sub-scotton (2) of section 23 of the Act to the Appellate Tribunal shall be made in Form No. 6 and shall be verified in the transport indicated therein.
- (2) A memorandum of cross-objections under sub-section(4) of section 23 of the Act to the Appellate Tribunal shall be made in the Form No. 7 and shall be verified in the manner indicated therein.";
  - (b) in the Appendix, after Form No. 2, the following forms shall be inserted, namely:- -

\_\_\_\_\_\_

# "FORM NO. 3

### EXPENDITURE-TAX

Form No. 3  Expend iture-tax Act, 1987 Section 8(1)/8(2) Rule 5	RETURN OF AGGREGATE OF THE PAYMEN RESPECT OF CHARGEABLE EXPENDITURE.	ITS RECE	IVED 1	IN	For u	se in Inc	ome-ta	x Office
Name in Block letter	'S		_ • • • - • • •		Pe	ermanco	 t <b>Лсс</b> от	unt No.
		- 1 1	_[[ 	- · · · · · · · · ·		1 1	l	<u> </u>
Office Address in Blo	ocic Letters			Vard/Cir sssssod/a				· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	Telephone No							
Assessment Year  If this is a revised ret furnishing the previo	urn, please state the receipt No. and date of	1	9					
Receipt No		Day	- - 	Month		Year	i	9
Status [Use Code 'See Note	s: 1]	, ,				·· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	<del>-</del>	
ta te whether Resident/Non-reside	nt/not ordiparily resident			]				
[Use the following C Non-resident 02, No	odes: Resident 01, n-ordinarily resident 03]		-					
PART—I STAT	EMENT OF CHARGEABLE EXPENDITURE	. <del></del>		<b>—</b> ———————————————————————————————————	<del> </del>		•	<del></del>
(a) any accomme (b) food or drift (c) food or drift (d) any a comme (e) any other seculp, swimme (f) any other seculp, the seculp is the seculp in the secul	e expenditure incurred in connection with the provision andation, residential or otherwise ask by the Hotal whether at the Hotal or outside at the Hotal or outside at the Hotal neglation in the hotal on hire of lease provises at the Hotal by the Hotal by way of beauty poing pool or other similar services at the Hotal by any other person by way of beauty positions at the Hotal by any other person by way of beauty positions at the Hotal by any other person by way of beautyming pool or other similar services  +(b)+(c)+(d)+(e)+(f)	utou, heal uty parlom	r, <u> </u>					
2. NET CHARGEA ton impressased tax Act, 1987).	BLE EXPENDITURE (as rounded off to the near too 288A of the Income-tax Act, 1961, as applied to	est mulfipl o Expendit	e of ure-					

### PART II-STATEMENT OF EXPENDITURE TAX

BREAK	C UP	OF CHARGI	BABLE EXPE	NDITURE,	EXPENDIT	URE TAX (	COLLECTED,	TAX PAID	to govern	MENT ANI
DATE	OF	<b>PAYMENT</b>	THEREOF	(MONTHY	VISE;)					

S. No.	Chargeable Expenditure	Expenditure Tax Collectible	Expenditure Tax Collected	Expenditure Tax paid to Government	Date of Payment (Attach challans)
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	<b>(</b> 6)
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
l.					
2.					
3.					
4.					•
5. 6.					
7.					
8.					
9.					
10-					
11.					
12.		d <del>ad, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,</del>	ب المحالية		<del></del>
TOTAL					
Balance expendit yet to be collected	ure-fax			τ	
	Colmn	(3)Colma (4): In figures -		المراجعة والمراجعة المحاجمة ا	سرار میشندآمان و کا بادر آسری ایسی ایمین اماد و کا
		In words			
Balance Expendito be pa	ture-tax id to				
Governo		o (A) - Calara (K). To Garrer		per period on the control of the con	
	Conn			eren mediarra sa ren e arment trock mediarrakanat az keren	to the state of th
					* * * * * * * * * * * * * * * * * * *
PART II	L-OTHER SUMS		RGEABLE-EXPENDIT See section 5 (i) to (i	TURE AND CLAIMED TO v)I	BE NOT TAXABILE
	مد النجار النجار <u>النجار النجار ال</u>				and are made and are a superior

VERIFICATION (See Notes 2 and 3)	

15

16

[भाग IIदाण्ड 3(ii)]		ं भारत का नामपत्र : अयाधारण अध्यक्त ज्ञानिक रूप प्राप्त का स्थापन स्थापन का स	13	
I, <del></del>		لىپىندۇك بىر ئىس ئىچىدىنىڭ ئۇد. يەردۇد ئىلىدۇر، ئىس - جو س ئاكەر، ئىرى سىرىسىدىن دېرىنى بىرىنىش ئىدىدىنىدىن بىر		
*Son/daug	hter/wife of Shri	ون لات فنورت فند لات لائد المعاليات من فعد لاحد لاحد لاحد لاحد المدالية مند لاحد فيت مند المدالية و		
pentic me-	(designation)	(Name of the Hotel/Restaurant, Beauty Parlour, Health Club, Swi Pool, etc.)	naming	
it is correct	and complete and that the amou	ledge and belief the information given in this return and the statements accoment of chargeable expenditure and other particulars shown therein are truly states seement year commencing on the 1st day of April, 19——.		
		he said financial year no other chargeable expenditure has been insurred in the ling Pool or in respect of day other service to which the Act applies.	*Hotel/	
1 further	r declare that in investmenty as		y it on	
nobalf of the	a *Hotebrestamant/beauty parlog	m/health olub/swimming nool, etc.		
Date · · ·				
Place · ·		( Siyaature)	h,	
	g - 1 1 1 m 2 m 2 m 2 m 3 m 3 m 3 m 3 m 3 m 3 m 3			
*Delete whic	thever is not applied blo.			
Notes:				
l. For	indicating the status, please use	the following code numbers:		
Indivi	·	•	01	
Hindu	a undivided family (other than the	cone mentioned below)	02	
-Hindu	t undivided family which has at le	ast one member with total income of the previous year exceeding Rs. 18,000	03	
Upreg	gistered firm	,	04	
Regist	tered firm (other than the one eng	gaged in profession)	05	
Regis	tered firm engaged in profession		06	
Assoc	iation of persons (AOP)		07	
Assoc	iation of persons (trusts)		08	
Bady	of individuals (BOI)		09	
Artific	cial juridical person		10	
- Coope	erative society		11	
- A doi	mestic company in which public a	re substantially interested	12	
	mestic company which is not a co. og company or an investment com	mpany in which the public are substantially interested and which is not a pany	13	
	nastic company which is a trading c are not substantially interested	company or an investment company and is also a company in which the	14	

2. This return should be signed by:

- Local authority

-A company other than a domestic company

- (a) In the case of an individual, by the individual himself, where the individual is absent from In ita by the individual concerned or hy some person duly authorised by him in this behalf, and where the individual is mentally incapacitated from attending to his affairs by his guardian or by any other person competent to act on his behalf.
- (b) In the case of a Hindu un livided family, by the Karta, and waste the Karta is absort from India or is monthly incapacitated from attending to his affairs, by any other adult member of such family.

- (c) in the case of a company, by the managing director thereof, or where for any unavoidable reason such managing director is not able to sign and verify there turn, or where there is no managing director, by any director thereof or where in the case of a non-resident, the assessment has been made on any person who has been treated as his agent under section 163 of the Income-tax Act, 1961, by such person.
- (d) in the case of a firm by the managing partner there of or where for any upavoidable reason such managing partner is not able to sign and verify the return, or where there is no managing partner as such: by any partner thereof not being a minor.
- (e) in the case of a local authority, by the principal officer thereof:
- (f) in the case any of other association, by any member of the association or the principal officer thereof; and
- (g) in the case of any other person, by that person or by some person competent to act on his behalf.
- 3. Before signing the verification, the signatory should satisfy himself that this return at the accompanying statements are correct and complete in all respects. Any person making a false statement in this return or the accompanying statements shall be liabe to prosecution upder section 27 of the Expenditure-tax Act, 1987 and on conviction be punishable with rigorous imprisonment for a term which shall not be less than theree months but which may extend to seven years and with fine
- 4. The tax collected during any calendar month in accordance with the provisions of sub-section (1) of section 7 of the Expenditure Tex Act, 1987 shall be paid to the credit of the Central Government by the 10th day of the month immediately following—the said calendar month and the proof of such monthly payment should be attached along with this return.

FORM NO. 4 EXPENDITURE TAX	
(See rule 6) Notice of Domand under Section 20 of the Expenditure-tax Act, 1987	
Hotter of Deliagia index decisor 20 of the Exponential case Not. 1907	P.A. No.
To	
This is to give you notice that for the assessment year————————————————————————————————————	
Tax on chargeable expenditure Tax raid under section $\mathcal{I}(2)$ Balance payable	Rs. — — — — — — — — — — — — — — — — — — —
<ol> <li>The amount should be paid to the Manager, State Bank of India/Reserve Bank of India/autho within 35 days/</li></ol>	Deputy Commissioner has been is enclosed for the purpose of mple interest at the rate of fifteen
4. If you do not pay the amount of tax within the period specified above, (penalty which may in arrear) may be imposed upon you after giving you a reasonable opportunity of being heard in accome-tax Act, 1961 as applied to Expenditure-tax by section 24 of the Expenditure-tax Act, 1987.	cordance with section 221 of the
5. If you do not pay the amount within the period specified above, proceedings for the recover dence with sections 222 to 227, 229, 231–232 and the Second Schedule and the Third Schedule to the to expenditure-tax by section 24 of the Expenditure -tax Act, 1987.	
6. If you intend to appeal against the assessment/fine/penalty you may present an appeal under tax Act, 1987 to the Commissioner of Income-tax (Appeals)————————————————————————————————————	<del></del>
Place	Assessing Officor
Date—— —— ——	Address

Notes:

If you wish to pay the amount by cheque, the cheque should be drawn in favour of the Manager. State Bank of India/Reserve Bank of India/authorised Bank.

- 2. If you intend to seek extension of time for payment of the amount or propose to make the payment by instalments, the application for such extension or, as the can; may be, permission to pay by instalments, should be made to the Assessing Officer before the expiry of the period specified in paragraph 2. Any request received after the expiry of the said period will not be entertained in view of the specific provisions of Section 220 (3) of the Income-tax Act. 1961 applied to the expenditure tax by section 24 of the Expenditure-tax Act. 1987.
- 3. Delete the inappropriate words

### FORM NO. 5

#### **EXPENDITURE-TAX**

(See rule 7)

(Appeals)
19.,
<del></del>
*** <del>*******</del> *
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
raan Marval age i iiy e b
opellant)
ppellanty
ition and
—
<i>t)</i>
)

#### Note:

- The form of appeal, ground of appeal and form of verification appended thereto should be signed by a person in accordance with the provisions of rule 7(2).
- 2. This memorandum of appeal, statement of facts and the grounds of appeal must be in duplicate and should be accompanied by a copy of the order appealed against and the notice of demand in original if any.
- 3. Delete inappropriate words.
- 4. \*Three particulars will be filled in the office of the Commissioner (Appeals).
- 5. 4-If the space provided herein is insufficient, separate enclosures may be used for the purpose

### FORM NO. o

### EXPENDITURE TAX

(Sec rule 8)

rm of Appeal to the Appellate Tribunal	
"Appeal No	IN THE INCOME TAX APPELLATE TRIBU
Respondent	Appellant
الله الذي الذي الذي الله الله الله الله الله الله الله الل	1. The State in which the assessment was mad
et was passed	2. Section under which the order appealed aga
	3. Assessment year in connection with which th
	4. **The Assessing Officer, passing the original
	5. "Section and sub-section of the Expenditure the Assessing Officer passed the order
961, as applied to are-lax Act, 1987	6. **The Commissioner (Appeals) passing the of the Act/section 131(2) of the Income-tax Act Expenditure-tax by section 24 of the Epond
ection 21 of the Aci	7. **The Commissioner passing the order unde
gainst	8. Date of communication of the order appeals
peliant	9. Address to which notices may be sent to the
	0. Address to which notices may be sent to the
	1. Date on which the teturn of chargeable exper assessment year referred to in item 3 was file
ofice, it any, calling liture for the assessment	<ol> <li>Date on which the assessee was served with a upon him to file the return of chargeable expenses year referred to in item 3</li> </ol>
*** - विकास महिला को महिला को अपने को अपने को अपने को को जो को उसे को अपने को अपने को जा को अपने को जा को को ज 	3. +Relief claimed in appeal
Signed (Appellant)	Grounds of appeal
Signed (Appellant)	Signed Authorised representative, it any)
VERIFICATION  t, do hereby declare that what is stated above is true to the best of my information	Tthe appelli
	na belief.
Signed (Appellan)	ace
for a second and the	erified today, the day

1. The memorand im of appeal must be in triplicate and should be accompanied by two copies (at least one of which should be a contribed copy) of the order appealed against and two copies of the relevant order of the Assessing Officer.

2. The memorandum of appeal in the case of an appeal by an assessee under section 23(1) of the Act must be accompanied by a fee of Rs. 200. It is suggested that the fee should be credited in any branch of the State Bank of India or a branch of the Reserve Bank of India or a branch of the authorised bank after obtaining the challan from the Assessing Officer and the triplicate challan sent to the Appellate Tribunal with the memorandum of appeal. The Appellate Tribunal will not accept cheques, drafts, hundies of other negotiable instruments.

- 3. The memorandum of appeal should be written in English or, if the appeal is filed in a bench located in any such State as is for the time being notified by the President of the Appellate Tribunal for the purposes of rule 5A of the Income-tax (Appellate Tribunals) Rules, 1963, then, at the option of the appellant, in Hindi, and should set forth concisely and under distinct heads, the grounds of appeal without any argument or narrative and such grounds should be numbered consecutively.
- 4. \*The number and year of appeal will be filled in the office of the Appellate Tribunal.
- 5. \*\*Delete the inapplicable items.
- 6. +If the space provided is found insufficient, separate enclosures may be used for the purpose.

	FORM NO. 7	
	EXPENDITURE TAX	
	[Seerule 8(2)]	
	Form of memorandum of cross-objections to the Appellate Tribun	al
	IN THE INCOME TAX APPELLATE TRIBUNAL	
	*Cross-objection No.————————————————————————————————————	
	**Jn Appeal No.—————of ————19———19——	
	Versus	
	Appellant Respondent	
1.	**Appeal No. allotted by the Tribunal to which memorandum of cross-objection relates.	
2.	The State in which the assessment was made	
3.	Section and sub-section under which the order appealed against was passed.	·
4.	Assessment year in connection with which the memorandum of cross-objections is prefered	·
5.	Date of receipt of notice of appeal filled by the appellant to the Tribunal	
6.	Address to which notices may be sent to the respondent (cross-objector)	
7.	Address to which notices may be sent to the appellant	
8.	+Relief claimed in the memorandum of cross-objections.	न्त्री अपनी कर्णांकृत्यानी अपनी क्षात्री क्षात्री क्षात्री क्षात्र क्षात्री क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क
+0	Grounds of cross-objections	
	Signed	Signed
(Aı	thorised representative, if any)	(Respondent)
, -	VERIFICATION	Ç
	1,	is true to the best of my infor-
	tion and belief.	
Ver	ified today theday of19	
		Signed
Pla	CC	(Respondent)
No	tes:	
	The memorandum of cross-objections must be in triplicate.	

- 2. The memorandum of cross-objections should be written in English, or, if the memorandum is filed in a Bench located in any such State as is for the time being notified by the President of the Appellate Trbunal for the purposes of rule 5A of the Income-tax (Appellate Tribunal) Rules, 1963 then, at the option of the respondent, in Hindi, and should set forth, concisely and under distinct heads the cross-objections without any argument or narrative and such objections should be numbered consecutively.
- 3. \*The number and year of memorandum of cross-objections will be filed in the office of the Appellate Tribunal.
- 4. \*\*The number and year of appeal as allotted by the office of the Tribunal and appearing in the notice of appeal received by the respondent is to be filled in hereby the respondent.
- 5. +If the space provided is insufficient, separate enclosures may be used for the purpose.

[No. 8006/F.No. 143/2/88-TPL] VIJAY MATHUR, Director (TPL)